यकृत एवं पित्त विज्ञान संस्थान (आईएलबीएस) द्वारा अशोक होटल, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में आयोजित 'विश्व हेपेटाइटिस दिवस संगोष्ठी'

27 जुलाई, 2019

सबसे पहले विश्व हेपेटाइटिस दिवस की पूर्व संध्या पर मुझे इस संगोष्ठी में आमंत्रित करने के लिए मैं यकृत एवं पित्त विज्ञान संस्थान (Institute of Liver and Biliary Sciences) को धन्यवाद देता हूँ।

मैं हेपेटाइटिस निवारण और नियंत्रण के संबंध में इस संस्थान द्वारा किये जा रहे अग्रणी प्रयासों की सराहना करता हूँ। इस अवसर पर मैं, भारत में वायरल हेपेटाइटिस के बारे में जागरूकता फैलाने, इसकी रोकथाम और चिकित्सा के क्षेत्र में किये जा रहे उत्कृष्ट कार्य को निकट से देखने का अवसर प्रदान करने के लिये भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

इस वर्ष, 'विश्व हेपेटाइटिस दिवस' का विषय 'फाइंड द मिसिंग मिलियन्स' है। नि:संदेह, जैसा कि इस विषय से स्पष्ट है कि हमारे समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह है कि लोगों में इस बीमारी के संबंध में जागरूकता का अभाव है और इसके कारण ऐसे मामले बड़ी संख्या में हैं जिनमें हेपेटाइटिस रोग का पता भी नहीं चल पाता है।

हेपेटाइटिस को लेकर लोगों में एड्स जैसी अवेयरनेस नहीं है और इसके खतरनाक होने का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि दुनिया भर में हर बारहवां आदमी इसका शिकार है।

हालांकि हेपेटाइटिस बी और एचआईवी के बैक्टीरिया के फैलने का पैटर्न एक ही है, लेकिन हेपेटाइटिस-बी एचआईवी के मुकाबले 50 से 100 गुणा ज्यादा खतरनाक है। ऐसा इसलिए, क्योंकि हेपेटाइटिस-बी का बैक्टीरिया बॉडी के बाहर भी कम से कम सात दिन तक जिंदा रहकर किसी हेल्दी इंसान को इंफेक्ट कर सकता है।

भारत में हेपेटाइटिस बी से संक्रमित रोगियों की संख्या लगभग 40 मिलियन है और लंबे समय तक अधिकतर लोगों को इस संक्रमण के बारे में पता न चल पाने के कारण उन्हें सिरोसिस अथवा यकृत कैंसर जैसी प्राणघातक बीमारियाँ होने का खतरा भी बढ जाता है।

आंकड़ों के अनुसार, प्रत्येक वर्ष लगभग 6 लाख रोगी हेपेटाइटिस बी वायरल के संक्रमण के कारण मर जाते हैं, ऐसे में यह बीमारी भारत में सबसे खतरनाक बीमारियों में से एक है। यह एक बहुत बड़ी संख्या है और इस संबंध में सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों और सरकार, नागरिक समाज, शिक्षा जगत तथा शोध संस्थानों से जुड़े लोगों के द्वारा निरन्तर प्रयास किये जाने की आवश्यकता है।

जिस प्रकार स्वच्छता के लिए 'स्वच्छ-भारत अभियान' चलाया गया है, उसी प्रकार हेपेटाइटिस की रोकथाम के लिए भी व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाए जाने की आवश्यकता है। साफ भोजन एवं साफ पानी और स्वच्छता से इस बीमारी के होने के खतरे को निश्चय ही रोका जा सकता है।

हम संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (SDG) के प्रति पूरी तरह से समर्पित हैं और हमारा लक्ष्य वर्ष 2030 तक इस प्राणघातक बीमारी को पूरी तरह से समाप्त करना है। वैश्विक स्तर पर भारत हेपेटाइटिस के सर्वाधिक मामले वाले देशों में से एक है, इस तथ्य का अर्थ यह है कि इस रोग को समाप्त करने के लिये हमें सभी प्रकार के उपाय करने होंगे। "चुनौतियाँ" बहुत मुश्किल हैं, लेकिन मुझे विश्वास है कि भारत इन चुनौतियों का डटकर सामना कर पाएगा।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि विगत वर्षों में, भारत ने पोलियो की बीमारी को खत्म कर दिया है जोकि एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या थी जिसने हमारे बहुत से बच्चों को अपंग बना दिया।

मेरा ऐसा मानना है कि हेपेटाइटिस जैसी बीमारी के प्रसार और इससे होने वाली मौतों का एक मुख्य कारण जागरूकता की कमी है और इसलिये, रोग के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिये सभी संबंधित लोगों की ओर से जोरदार प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

स्वच्छ भारत मिशन एक ऐसा सकारात्मक कदम है जिसे और अधिक बढ़ावा दिया जाना चाहिये। मुझे आशा है कि इन कदमों से भारत में हेपेटाइटिस 'ए' जैसी बीमारियों के प्रसार में कमी लाने में सहायता मिलेगी। सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्यरत सिविल सोसाइटी समूह आगे बढ़कर यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि ये कदम जल्द से जल्द उठाए जाएं।

भारत सरकार ने वायरल हेपेटाइटिस के नियंत्रण के लिये राष्ट्रीय कार्य योजना की भी शुरूआत की है जिसे देश भर के विशेषज्ञों द्वारा तैयार किया गया है। यह योजना भारत की प्रतिबद्धताओं के अनुरूप है और यह वैश्विक परिप्रेक्ष्य को भी ध्यान में रखती है। यह एक रणनीतिक ढांचा उपलब्ध कराती है जिसके आधार पर राष्ट्रीय वायरल हेपेटाइटिस नियंत्रण कार्यक्रम तैयार किया गया है, जिसकी शुरूआत स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य अभियान के अन्तर्गत की गई थी। यह कार्यक्रम भी सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में हमारी वैश्विक प्रतिबद्धता के अनुरूप है।

भारत विश्व के कुछ ऐसे देशों में शामिल है जिसने अपने लाभार्थियों को नि:शुल्क सुविधाएं और जीवनपर्यन्त दवाएं प्रदान कर सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्र में हेपेटाइटिस बी और हेपेटाइटिस सी का प्रबन्धन आरम्भ किया है। सस्ती जेनेरिक दवाओं के साथ ही जागरूकता और रोग का सही समय पर पता लगाने से संबंधित निवारक उपायों से इस बीमारी के बुरे प्रभावों को समाप्त करने में बहुत सहायता प्राप्त होगी।

हमारा लक्ष्य हेपेटाइटिस बी और सी से संक्रमित लोगों की संख्या और बीमारी तथा मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी लाना भी है। सिरोसिस और यकृत कैंसर से जुड़े जोखिमों को भी राष्ट्रीय कार्य योजना के अन्तर्गत खत्म करने का एक प्रमुख लक्ष्य है।

हमें लोगों को इस संबंध में जागरूक बनाने के लिये प्रयास करने चाहिये कि वे हेपेटाइटिस का शिकार कैसे हो जाते हैं और हेपेटाइटिस विषाणुओं से स्वयं को तथा अपने परिवार को बचाने के लिये उन्हें क्या करने की आवश्यकता है। स्वास्थ्य क्षेत्र के प्रशासकों, नीति निर्माताओं तथा चिकित्सा पेशेवरों के बीच जागरूकता और समुचित प्रयासों की भी आवश्यकता है। हेपेटाइटिस सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिये एक बड़ी

चुनौती है। लेकिन मुझे इस बीमारी का इलाज ढूंढ़ने में यकृत एवं पित्त विज्ञान संस्थान जैसे संस्थानों और सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्र के समर्पित पेशेवरों तथा शोधकर्ताओं की क्षमताओं पर पूर्ण विश्वास है। मुझे विश्वास है कि हम सब साथ मिलकर इस चुनौती का सामना करेंगे और इस बीमारी को वर्ष 2030 तक पूर्णरूप से समाप्त करेंगे।

हम यह सुनिश्चित करने के लिये लगातार कार्य करेंगे कि नवजात शिशुओं और जोखिम की संभावना वाले वयस्क लोगों को समय पर हेपेटाइटिस से बचाव के टीके लगाए जाएं। उन बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये जो "नये भारत" की नींव हैं।

मित्रो, अन्त में, मैं पुन: एक बार इस बात पर बल देना चाहता हूँ कि स्वास्थ्य प्रोत्साहन पहलों को मजबूत किया जाना आवश्यक है। हमें अभी इस दिशा में काफी कार्य करना है और मैं यह जानकर प्रसन्न हूँ कि हम सही रास्ते पर हैं।

इस तरह की गम्भीर बीमारियों से निपटने के लिए हम सबको साथ मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। आप सभी विशेषज्ञगण एवं हम जैसे जनप्रतिनिधि मिलकर और प्रभावी ढंग से इस दिशा में कार्य कर सकते हैं और इसके लिए आप लोगों को जनप्रतिनिधियों के साथ एवं सरकारी कार्यपालिका के साथ समन्वय, अंतरसंवाद में निरंतर वृद्धि करने की आवश्यकता है।

इसके लिए मैं आप लोगों को संसद में होने वाले कई कार्यक्रमों से जोड़ना चाहता हूँ जैसे ब्यूरो ऑफ पार्लियामेंटरी स्टडीज एण्ड ट्रेनिंग, स्पीकर रिसर्च इनीशियेटिव इत्यादि। ऐसा होने से जनप्रतिनिधि में विशेष जागरूकता आएगी और वे इस संदेश को जन-जन तक ले जा सके। मैं संसद में ऐसे विषयों पर चर्चा का भी प्रयास करूंगा जिससे इस दिशा में और फलदायी समाधान निकले।

इसी के साथ, मैं एक बार फिर आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने इस अवसर पर मुझे आमंत्रित किया। मैं आपके उन सभी प्रयासों के लिये आपको शुभकामनाएं देता हूँ जो हमें एक स्वस्थ और खुशहाल भविष्य की ओर ले जाएंगे।

———